

02/05/2024

शामिल विषय (TOPICS COVERED)

1. अप्रैल का सकल जीएसटी राजस्व ₹2.1 लाख करोड़ से अधिक हो गया। नए रिकॉर्ड में (2 मई)
2. IIA ने चंद्रमा के सबसे चमकीले तारे Antares का रहस्योद्घाटन करने वाला वीडियो जारी किया
3. इसरो को चंद्रमा के ध्रुवीय गड्ढों में पानी की बर्फ की बढ़ती संभावना का प्रमाण मिला है
4. वाइस-एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन अब नौसेना के उप-प्रमुख हैं
5. ईसी शीर्ष अदालत के आदेश के अनुसार प्रतीक लोडिंग इकाइयों पर प्रोटोकॉल लाता है
6. कुछ तारों के अंतिम भाग्य की कुंजी रखते हैं
7. ओटावा में प्लास्टिक संधि वार्ता थोड़ी प्रगति के साथ संपन्न हुई
8. सेवाओं की कहानी
9. असमानता से लड़ने का गलत तरीका
10. पशु संरक्षण विधेयक
11. समुद्र भी उगता है
12. बजट और विधेयक कम विचार-विमर्श के साथ पारित किये गये
13. गर्म होते ग्रह पर श्रम का विश्लेषण
14. समकालीन कल्पना में विभाजन की यादें
15. 'ऑस्ट्रेलिया में विदेशी हस्तक्षेप से निपटने के लिए कानून हैं
16. पत्रून मामले में अमेरिका को भारत से जवाबदेही की उम्मीद
17. AUKUS तकनीकी समझौता

अप्रैल का सकल जीएसटी राजस्व ₹2.1 लाख करोड़ से अधिक हो गया। नए रिकॉर्ड में (2 मई)

वित्त मंत्री का कहना है कि अर्थव्यवस्था में मजबूत गति के कारण पिछले उच्चतम आंकड़े की तुलना में 12.4% की वृद्धि हुई है ; अप्रैल का जीएसटी राजस्व आमतौर पर सबसे अधिक होता है, क्योंकि करदाता वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले अनुपालन की समय सीमा पूरी कर लेते हैं

- भारत का सकल वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) राजस्व अप्रैल में रिकॉर्ड ₹2.1 लाख करोड़ तक पहुंच गया।

- यह पिछले वर्ष के अप्रैल में ₹1.87 लाख करोड़ के पिछले उच्चतम संग्रह की तुलना में 12.4% की वृद्धि दर्शाता है।
- रिफंड पर विचार करने के बाद, महीने के लिए जीएसटी राजस्व ₹1.92 लाख करोड़ रहा, जो अप्रैल 2023 से 15.5% की वृद्धि दर्शाता है।
- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अर्थव्यवस्था में तेजी और कुशल कर संग्रह को मजबूत जीएसटी राजस्व का श्रेय दिया।
- उन्होंने कहा कि राज्यों के पास आईजीएसटी निपटान का कोई बकाया नहीं है।
- घरेलू लेनदेन से राजस्व में 13.4% की वृद्धि हुई, जबकि माल के आयात में 8.3% की वृद्धि देखी गई, जिसने जीएसटी संग्रह में ₹2 लाख करोड़ को पार करने में योगदान दिया।
- यह माल आयात से राजस्व में सुधार का प्रतीक है, जो मार्च में 5% कम हो गया था।
- हालांकि, पिछले महीने की तुलना में अप्रैल में घरेलू लेनदेन में वृद्धि थोड़ी कमजोर हुई।
- कुल मिलाकर, मार्च में सकल जीएसटी राजस्व 11.5% की धीमी गति से बढ़ा, जबकि शुद्ध राजस्व 18.4% बढ़ा।
- अप्रैल में आम तौर पर वर्ष का उच्चतम जीएसटी राजस्व देखा जाता है क्योंकि करदाता अपने वित्तीय वर्ष के लेनदेन को अंतिम रूप देते हैं और अनुपालन की समय सीमा को पूरा करते हैं।
- विशेषज्ञों का अनुमान है कि पिछले महीने की रिकॉर्ड बढ़ोतरी के बाद आने वाले महीनों में जीएसटी राजस्व में कमी आ सकती है।
- वित्तीय वर्ष 2023-24 में मासिक औसत जीएसटी संग्रह ₹1.68 लाख करोड़ से कुछ वृद्धि की उम्मीद है।
- जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर संग्रह पिछले महीने ₹13,260 करोड़ के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, जिसमें आयातित वस्तुओं पर एकत्र ₹1,008 करोड़ भी शामिल है।
- ऑटोमोबाइल और तंबाकू उत्पादों जैसे चुनिंदा सामानों पर 28% की उच्चतम जीएसटी दर से ऊपर उपकर लगाया जाता है।
- वर्ष 2017 में जीएसटी व्यवस्था में बदलाव के कारण राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए शुरू में पांच साल के लिए शुरू किए गए इस उपकर का उपयोग अब महामारी के दौरान लिए गए ऋणों को चुकाने के लिए किया जा रहा है।
- मंत्रालय ने सभी घटकों के सकारात्मक प्रदर्शन पर प्रकाश डाला, जिसमें 43,846 करोड़ रुपये का केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (सीजीएसटी) राजस्व, 53,538 करोड़ रुपये का राज्य जीएसटी राजस्व और 99,623 करोड़ रुपये का एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (आईजीएसटी) अंतर्वाह शामिल है।
- आईजीएसटी संग्रह में आयातित वस्तुओं पर संग्रहित 37,826 करोड़ रुपये शामिल थे।
- केंद्र सरकार ने संग्रहित आईजीएसटी में से सीजीएसटी के लिए ₹50,307 करोड़ और एसजीएसटी के लिए ₹41,600 करोड़ का निपटान किया, जिसके परिणामस्वरूप नियमित निपटान के बाद अप्रैल 2024 के लिए सीजीएसटी के लिए कुल ₹94,153 करोड़ और एसजीएसटी के लिए ₹95,138 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।
- जम्मू और कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम सहित चार राज्यों में पिछले महीने राजस्व में गिरावट दर्ज की गई।
- आठ राज्यों में घरेलू राजस्व में समग्र वृद्धि की तुलना में धीमी वृद्धि देखी गई, जिनमें झारखंड (3%), उत्तराखंड (4%), और तमिलनाडु (6%) में सबसे कमजोर वृद्धि देखी गई।

- **परिभाषा:** किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए मौजूदा कर देनदारी के ऊपर लगाया गया कर। एकत्रित राजस्व का उपयोग केवल उस निर्दिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाना चाहिए।
- **उद्देश्य:** विशिष्ट सरकारी कार्यक्रमों या विकास के लिए धन जुटाने के लिए पेश किया गया, जो अक्सर सामाजिक कल्याण, बुनियादी ढांचे या पर्यावरण संरक्षण से संबंधित होते हैं।
- **उदाहरण:**
 - शिक्षा उपकर
 - स्वास्थ्य उपकर
 - स्वच्छ भारत उपकर
 - कृषि कल्याण उपकर

अधिभार

- **परिभाषा:** मौजूदा कर देयता के ऊपर लगाया जाने वाला अतिरिक्त कर। उपकर के विपरीत, एकत्रित राजस्व सामान्य सरकारी कोष में जाता है और इसका उपयोग किसी भी उद्देश्य के लिए किया जा सकता है।
- **उद्देश्य:** आमतौर पर अतिरिक्त राजस्व जुटाने या राजकोषीय जरूरतों को पूरा करने के लिए एक अस्थायी उपाय के रूप में लगाया जाता है। अक्सर उच्च आय वर्ग को लक्षित करता है।
- **उदाहरण:**
 - आयकर अधिभार (उच्च आय करदाताओं के लिए)
 - कॉर्पोरेट अधिभार

मुख्य अंतर

विशेषता	उपकर	अधिभार
उद्देश्य	विशिष्ट, पूर्व-निर्धारित उद्देश्य	सामान्य राजस्व प्रयोजन
निधि आबंटन	जिस विशिष्ट उद्देश्य के लिए इसे एकत्र किया गया है, उसके लिए निर्धारित	भारत की समेकित निधि (सामान्य सरकारी राजस्व)
गणना	कुल कर राशि पर लगाया गया (किसी भी मौजूदा अधिभार सहित)	केवल आधार कर राशि पर लगाया जाता है
लक्ष्य	सभी करदाताओं पर लागू होता है	चयनात्मक रूप से लागू किया जा सकता है (जैसे कि उच्च आय वाले लोगों पर)

आईआईए ने चंद्रमा के सबसे चमकीले तारे एंटारेस का वीडियो जारी किया (2 मई)

- बेंगलुरु में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स (आईआईए) ने चमकीले लाल तारे एंटारेस के सामने चंद्रमा के गुजरने का फिल्मांकन किया।
- यह घटना 27 अप्रैल को घटी और लगभग 40 मिनट तक चली, इस दौरान चंद्रमा ने एंटारेस को अस्पष्ट कर दिया।
- यह घटना केवल दक्षिण भारत से ही दिखाई दे रही थी।
- आईआईए ने अपने बेंगलुरु परिसर में आठ इंच के टेलीस्कोप पर लगे कैमरे का उपयोग करके इस घटना को कैद किया।
- गुप्त घटनाएँ, जहाँ चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करते समय अपने पीछे तारों या ग्रहों को छिपा लेता है, कभी-कभी घटित होता है।
- अंतरेस, जिसे ज्येष्ठा के नाम से भी जाना जाता है, वृश्चिक तारामंडल का सबसे चमकीला तारा है।

- चंद्रमा की पृथ्वी से निकटता के कारण इस तरह के रहस्य विश्व के केवल विशिष्ट स्थानों पर ही दिखाई देते हैं।
- भारत से दिखाई देने वाले एंटारेस का अंतिम रहस्य उसी वर्ष 5 फरवरी को हुआ था।
- अगला रहस्योद्घाटन जून 2027 में होने की उम्मीद है।
- बेंगलुरु के दृष्टिकोण से, एंटारेस देर रात 1:13 बजे के आसपास गिब्सस चंद्रमा के उज्वल पक्ष के पीछे गायब हो गया और लगभग 1:53 बजे अंधेरे पक्ष में फिर से दिखाई दिया।

इसरो को चंद्रमा के ध्रुवीय गड्डों में पानी की बर्फ की बड़ी हुई संभावना का प्रमाण मिला (2 मई)

- इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एसएसी) सहित भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने आईआईटी कानपुर, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, जेट प्रोपल्शन प्रयोगशाला और आईआईटी (आईएसएम) धनबाद के शोधकर्ताओं के साथ सहयोग किया।
- उनके अध्ययन में चंद्रमा के ध्रुवीय क्रेटर में पानी की बर्फ होने की संभावना बढ़ने का सबूत मिला।
- पहले कुछ मीटर के भीतर उप-सतह बर्फ की मात्रा दोनों चंद्र ध्रुवों की सतह बर्फ से पांच से आठ गुना अधिक होने का अनुमान है।
- नमूने या उत्खनन के लिए इस बर्फ तक पहुंचने के लिए चंद्रमा पर ड्रिलिंग करना भविष्य के मिशनों और निरंतर मानव उपस्थिति के लिए आवश्यक माना जाता है।
- अध्ययन से पता चलता है कि उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र की तुलना में लगभग दोगुना पानी की बर्फ है।
- इम्ब्रियन काल में ज्वालामुखीय हलचल के दौरान निकली गैसों से उत्पन्न हुई है।
- जल बर्फ का वितरण मैरे ज्वालामुखीयता और अधिमान्य प्रभाव क्रेटरिंग से प्रभावित होता है।
- चंद्र ध्रुवों पर जल बर्फ वितरण और गहराई का सटीक ज्ञान, चंद्र वाष्पशील पदार्थों की खोज करने वाले मिशनों के लिए भविष्य में लैंडिंग और नमूनाकरण स्थलों के चयन के लिए महत्वपूर्ण है।
- यह अध्ययन चंद्रमा पर अस्थिर अन्वेषण के लिए इसरो की भविष्य की योजनाओं का समर्थन करता है।

वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन अब नौसेना के उप-प्रमुख हैं (2 मई) (प्रारंभिक परीक्षा)

- वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन ने भारतीय नौसेना के उप प्रमुख का पदभार ग्रहण किया।
- इससे पहले वह कार्मिक प्रमुख के पद पर कार्यरत थे।
- एयर मार्शल नागेश कपूर ने बेंगलुरु में भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के प्रशिक्षण कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ (एओसी-इन-सी) के रूप में पदभार संभाला।
- संचार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में विशेषज्ञता वाले वाइस-एडमिरल स्वामीनाथन 1 जुलाई 1987 को नौसेना में शामिल हुए।
- कार्यभार संभालने पर, उन्होंने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की और साउथ ब्लॉक लॉन पर गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया।
- वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडकवासला और यूनाइटेड स्टेट्स नेवल वॉर कॉलेज, न्यूपोर्ट, रोड आइलैंड, यूएस सहित प्रतिष्ठित संस्थानों के पूर्व छात्र हैं।

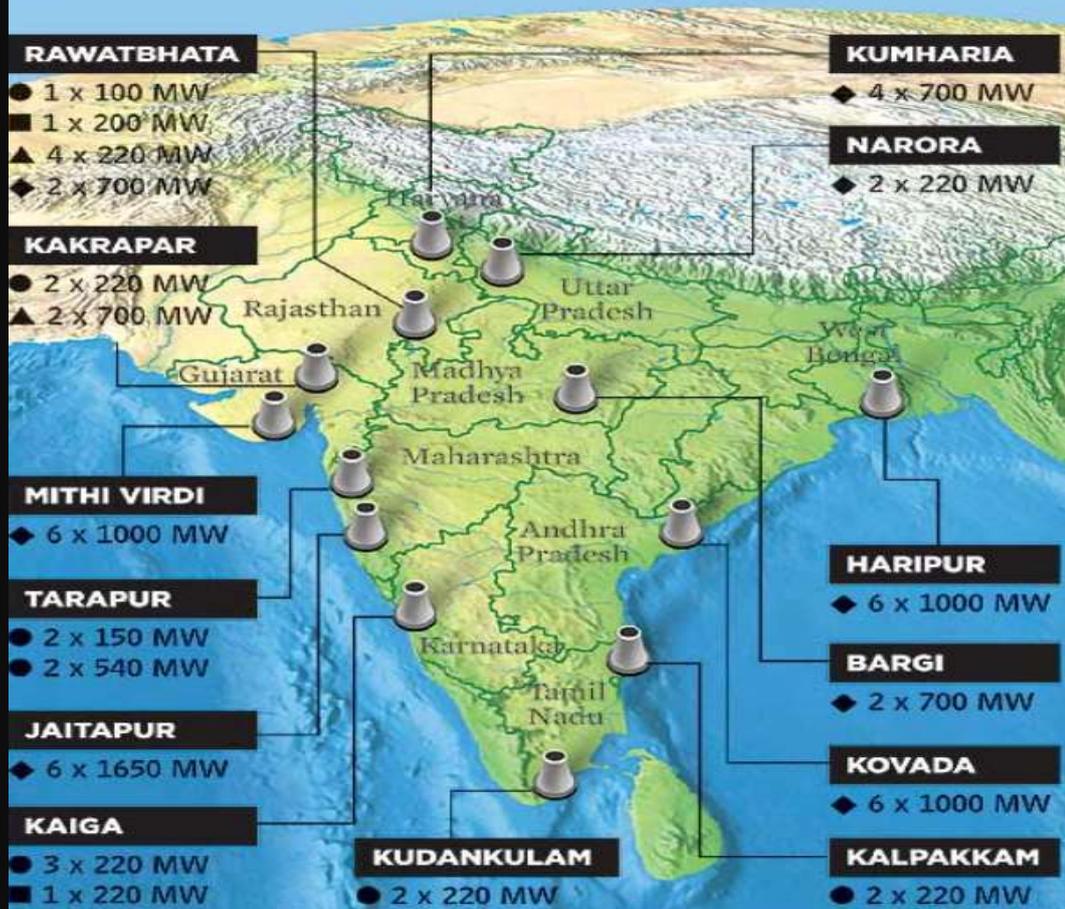
- अपने नौसैनिक करियर के दौरान, वाइस-एडमिरल स्वामीनाथन ने विभिन्न महत्वपूर्ण परिचालन, स्टाफ और प्रशिक्षण पदों पर कार्य किया।
- उन्होंने कई जहाजों की कमान संभाली, जिनमें आईएनएस विद्युत और आईएनएस विनाश जैसे मिसाइल जहाज और विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रमादित्य शामिल हैं।

जैतापुर में परमाणु ऊर्जा संयंत्र

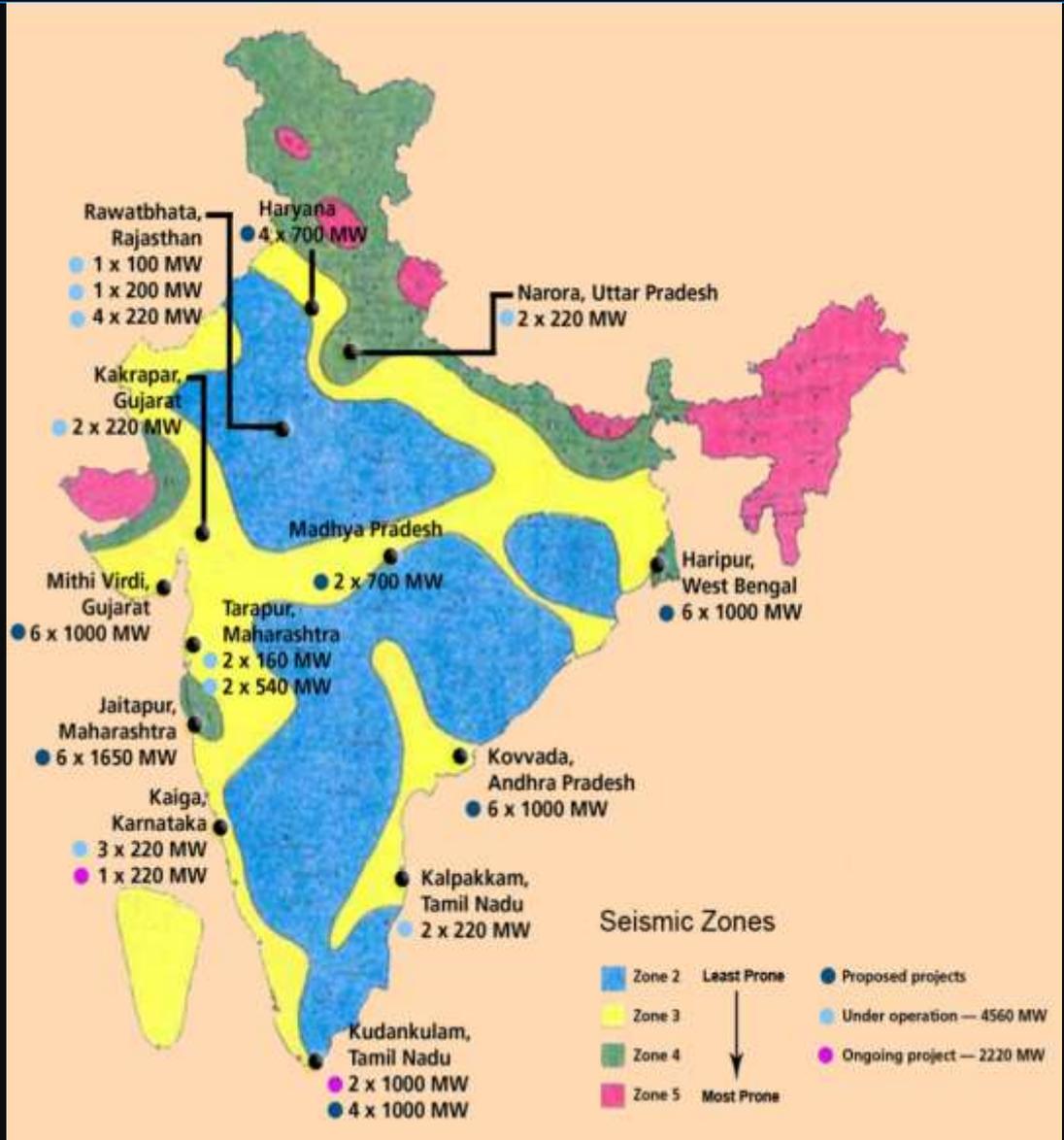
- **स्थान:** मडबन गांव, रत्नागिरी जिला, महाराष्ट्र, भारत।

PatrioticCLAS

THE NUCLEAR ENERGY SPREAD



Patric



- **संचालक:** न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल), एक सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी।
- **प्रौद्योगिकी भागीदार:** Électricité de France (EDF), एक फ्रांसीसी ऊर्जा कंपनी।
- **स्थिति:** प्रस्तावित, रूपरेखा समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए लेकिन भूमि अधिग्रहण और निर्माण अभी भी बड़े पैमाने पर शुरू नहीं हुआ है।
- **क्षमता:** दुनिया का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा संयंत्र बनने की योजना है, शुरुआत में छह यूरोपीय दबावयुक्त रिएक्टर (ईपीआर) होंगे जिनकी संयुक्त क्षमता 9,900 मेगावाट होगी।

प्रमुख विशेषताएँ

- **ईपीआर प्रौद्योगिकी:** ईपीआर एक जेनरेशन III+ रिएक्टर डिज़ाइन है जिसे एक उन्नत और सुरक्षित तकनीक माना जाता है।
- **बिजली उत्पादन:** जेएनपीपी को लाखों घरों को बिजली देने के लिए पर्याप्त बिजली पैदा करने का अनुमान है।
- **आर्थिक प्रभाव:** इस परियोजना से निर्माण और संचालन के दौरान महत्वपूर्ण रोजगार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है, साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

वर्तमान स्थिति

- **भूमि अधिग्रहण:** परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण कुछ स्थानीय विरोध के साथ एक महत्वपूर्ण चुनौती रही है। हालाँकि, भूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अधिग्रहित किया जा चुका है।

- **वित्तपोषण:** परियोजना के लिए वित्तपोषण तंत्र पर अभी भी भारत और फ्रांस के बीच चर्चा चल रही है।
- **पर्यावरणीय मंजूरी:** परियोजना को 2010 में पर्यावरणीय मंजूरी मिल गई, लेकिन परियोजना के आगे बढ़ने पर आगे और अनुमोदन की आवश्यकता हो सकती है।

विवाद और चिंताएँ

- **लागत:** अनुमानित परियोजना लागत बहुत अधिक है, जिससे इसकी आर्थिक व्यवहार्यता पर चिंता उत्पन्न हो रही है।
- **सुरक्षा:** परमाणु ऊर्जा में हमेशा कुछ सुरक्षा जोखिम जुड़े रहते हैं, तथा कुछ स्थानीय समुदायों में इसको लेकर आशंकाएं रहती हैं।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** परियोजना के समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और स्थानीय पर्यावरण पर संभावित प्रभाव के बारे में चिंताएं मौजूद हैं।
- **स्थानीय विरोध:** कुछ स्थानीय समूह और मछुआरे विस्थापन और पारंपरिक आजीविका को नुकसान की चिंता का हवाला देते हुए परियोजना का विरोध कर रहे हैं।

ईसी ने शीर्ष अदालत के आदेश के अनुसार सिंबल लोडिंग इकाइयों पर प्रोटोकॉल जारी किया (2 मई)

- चुनाव आयोग (ईसी) ने 26 अप्रैल से सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुपालन में प्रतीक लोडिंग इकाइयों (एसएलयू) को संभालने और भंडारण के लिए एक विस्तृत प्रोटोकॉल जारी किया।
- सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार, परिणाम घोषित होने के बाद कम से कम 45 दिनों के लिए एसएलयू को इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के साथ कंटेनर में सील और संग्रहित किया जाना चाहिए।
- एसएलयू ऐसे उपकरण हैं जो वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) या पेपर ट्रेल मशीनों पर उम्मीदवारों के नाम और प्रतीक अपलोड करते हैं।
- पहले, मतदान से पहले भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) या ईसी के इंजीनियरों द्वारा स्थानीय चुनाव अधिकारियों को एसएलयू दिए जाते थे। मतदान के बाद इन्हें इन इंजीनियरों को लौटा दिया गया।
- चुनाव आयोग ने सभी राज्य मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को 1 मई से लागू होने वाले नए प्रोटोकॉल के अनुसार ईवीएम में एसएलयू के रख-रखाव और भंडारण के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा स्थापित करने का निर्देश दिया है।
- पर्याप्त मात्रा में एसएलयू कंटेनर, आमतौर पर प्रति विधानसभा क्षेत्र दो से चार, आवश्यकताओं के आधार पर अग्रिम रूप से तैयार किए जाने चाहिए।
- ये संशोधित प्रोटोकॉल 1 मई या उसके बाद वीवीपैट में प्रतीक लोड करने के सभी मामलों पर लागू होंगे।
- इसके अतिरिक्त, सर्वोच्च न्यायालय ने ई.वी.एम. में लगे माइक्रो-कंट्रोलर्स के सत्यापन की भी अनुमति दे दी।

अंतिम भाग्य की कुंजी रखते हैं (2 मई)

- पदार्थ परमाणुओं से बना है, जिनमें प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन होते हैं।
- प्रोटॉन और न्यूट्रॉन परमाणु के नाभिक के अंदर पाए जाते हैं, जबकि इलेक्ट्रॉन नाभिक के चारों ओर परिक्रमा करते हैं।
- प्रोटॉन और न्यूट्रॉन मिश्रित कण होते हैं जो क्वार्क नामक छोटे कणों से बने होते हैं।
- क्वार्क अलगाव में मौजूद नहीं हो सकते हैं और हमेशा दो या तीन के समूह में पाए जाते हैं, जिन्हें हैड्रॉन कहा जाता है।
- हैड्रॉन, जैसे प्रोटॉन और न्यूट्रॉन, क्वार्क के समूह के उदाहरण हैं।

- व्यवहार के आधार पर क्वार्क का अध्ययन करते हैं और यह समझने में रुचि रखते हैं कि क्वार्क कैसे मिलकर विभिन्न प्रकार के हैड्रॉन बनाते हैं।

जब क्वार्क एकत्रित हो जाते हैं

- 20 फरवरी को प्रकाशित एक हालिया अध्ययन में पाया गया कि कुछ कण वातावरण में दो-क्वार्क क्लंप की तुलना में तीन-क्वार्क क्लंप बनने की अधिक संभावना है।
- यह खोज पारंपरिक कण-भौतिकी मॉडल को चुनौती देती है जो सुझाव देते हैं कि क्वार्क समेकन कण पर्यावरण से स्वतंत्र है।
- 15 मार्च को प्रकाशित एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि ये गुच्छे पूरी तरह से भारी क्वार्कों से बने हैं, जबकि प्रोटॉन और न्यूट्रॉन हल्के क्वार्कों से बने हैं।
- भारी क्वार्क समूह अल्पकालिक होते हैं और इनके अध्ययन के लिए उन्नत उपकरणों और कंप्यूटिंग शक्ति की आवश्यकता होती है।
- सभी प्रकार के क्वार्कों तथा नाभिकीय संलयन और तारों के भाग्य पर उनके प्रभाव को समझने के लिए भारी क्वार्क समूहों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- क्वार्क तारों के मामले में, क्वार्कों को समझने से सीधा प्रभाव पड़ सकता है।

हर सितारे का तनाव

- तारे गुरुत्वाकर्षण और नाभिकीय बल के बीच संतुलन प्राप्त कर लेते हैं, जिससे पतन या विस्फोट को रोका जा सकता है।
- तारे के द्रव्यमान से उत्पन्न गुरुत्वाकर्षण, तारे को ध्वस्त कर देता है, जबकि संलयन अभिक्रिया से उत्पन्न नाभिकीय बल, तारे को बाहर की ओर धकेलता है।
- जब किसी तारे की संलयन सामग्री समाप्त हो जाती है, तो नाभिकीय संलयन कमजोर हो जाता है, और गुरुत्वाकर्षण हावी हो जाता है, जिससे पतन होता है।
- ढहने के बाद किसी तारे का भाग उसके द्रव्यमान पर निर्भर करता है, जिसके परिणामस्वरूप एक सफेद बौना, न्यूट्रॉन तारा या ब्लैक होल बनता है।
- यदि सूर्य 20 गुना अधिक विशाल होता, तो मृत्यु के बाद यह एक ब्लैक होल में समा सकता था।
- सूर्य से लगभग आठ गुना भारी तारा न्यूट्रॉन तारा बन सकता है।
- ऐसी अटकलें हैं कि तारे न्यूट्रॉन तारा बनाने के लिए बहुत भारी हैं लेकिन ब्लैक होल बनाने के लिए इतने भारी नहीं हैं कि संभवतः क्वार्क तारा बन सकें।

'क्वार्क पदार्थ' दर्ज करें

- न्यूट्रॉन तारे तब बनते हैं जब किसी विशाल तारे का कोर ढह जाता है, जिससे प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन मिलकर न्यूट्रॉन में बदल जाते हैं।
- न्यूट्रॉन सितारों की दुर्गम प्रकृति के कारण भौतिकविदों के पास उन पर प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक डेटा का अभाव है।
- न्यूट्रॉन सितारों को समझना महत्वपूर्ण है, लेकिन उनका द्रव्यमान और त्रिज्या अधिकांश के लिए अज्ञात है।
- न्यूट्रॉन तारे का पदार्थ अविश्वसनीय रूप से सघन होता है, जो दो सूर्यों के बराबर द्रव्यमान को मात्र 25 किमी चौड़े गोले में समाहित कर लेता है।

- यह अत्यधिक दबाव न्यूट्रॉन को पदार्थ की एक नई अवस्था में, संभवतः क्वार्क पदार्थ में, बाध्य कर सकता है, जहां केवल क्वार्क ही मौजूद होते हैं।
- दिसंबर 2023 में हेलसिंकी विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला कि अधिकांश विशाल न्यूट्रॉन तारों में संभवतः क्वार्क पदार्थ मौजूद होगा।
- अध्ययन में खगोलभौतिकीय प्रेक्षणों को सुपरकंप्यूटर पर की गई सैद्धांतिक गणनाओं के साथ संयोजित किया गया।
- हालाँकि, खगोलभौतिकीय प्रेक्षणों की कम संख्या के कारण परिणाम की विश्वसनीयता सीमित है।
- क्वार्क पदार्थ निर्माण और इसके निहितार्थ को समझने के लिए अधिक अवलोकन संबंधी डेटा की आवश्यकता है।

क्वार्क की आवश्यकता

- ज्ञात भौतिक गुणों के आधार पर पदार्थों के वृहद गुणों की गणना करने के लिए अवस्था समीकरणों का उपयोग किया जाता है।
- न्यूट्रॉन सितारों के लिए, टॉल्मन-ओपेनहाइमर-वोल्को समीकरण का उपयोग किया जाता है, जो क्वार्क की उपस्थिति की संभावना का आकलन करता है।
- क्वार्क, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के निर्माण खंड, छह प्रकार में आते हैं या 'एवोर्स', आकर्षण और अजीब जैसे विचित्र नामों के साथ।
- 'क्वार्क' शब्द भौतिक विज्ञानी मरे गेल-मैन द्वारा गढ़ा गया था, जो जेम्स जॉयस के "फिननेगन्स वेक" से प्रेरित था।
- न्यूट्रॉन, तटस्थ होने के बावजूद, एक चुंबकीय क्षण प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शाता है कि वे विद्युत आवेश वाले छोटे कणों से बने होते हैं जो रद्द हो जाते हैं।
- गेल-मैन ने 1960 के दशक में इन छोटे कणों को 'क्वार्क' के रूप में प्रस्तावित किया और 1970 के दशक में उनके अस्तित्व की पुष्टि की गई, जिससे कण भौतिकी की हमारी समझ में क्रांति आ गई।

क्वार्क को मुक्त करना

- क्वार्क मूल कण हैं जो छह प्रकार के होते हैं: ऊपर, नीचे, शीर्ष, तल, विचित्र, और आकर्षण।
- प्रत्येक क्वार्क में तीन प्रकार के रंग आवेशों में से एक होता है, तथा इसके अनुरूप प्रतिकार्क भी होते हैं।
- जब एक क्वार्क और एंटीक्वार्क मिलते हैं तो वे मेसॉन बनाते हैं, जबकि तीन क्वार्क मिलकर बैरियन बनाते हैं।
- क्वार्क्स, ग्लून्स द्वारा एक दूसरे से बंधे होते हैं, जो कणों का एक अन्य समूह है।
- नाभिकीय बल बहुत शक्तिशाली होते हैं, जो क्वार्कों को रिक्त स्थान में भी मजबूती से बांधे रखते हैं।
- क्वॉंटम क्रोमोडायनामिक्स वह सिद्धांत है जो क्वार्कों को एक साथ बांधे रखने वाले नाभिकीय बल की व्याख्या करता है।
- अत्यंत उच्च ऊर्जा पर, नाभिकीय पदार्थ "विसंयोजी" अवस्था से गुजर सकता है, जिससे एक नया चरण निर्मित होता है, जहां क्वार्क स्वतंत्र रूप से विद्यमान रहते हैं।
- उच्च ऊर्जा पर सीसा आयनों को तोड़कर, क्वार्क-ग्लूऑन प्लाज्मा बनाकर, प्रारंभिक ब्रह्मांड की स्थितियों से मिलते-जुलते, डिकॉन्फाइनमेंट का प्रमाण प्राप्त किया गया है।
- यह प्लाज्मा बिग बैंग के तुरंत बाद अस्तित्व में था, इससे पहले कि कण आपस में जुड़कर पदार्थ बन गए।
- क्लंपिंग प्रक्रिया ऊर्जा जारी कर सकती है या परिवेश को संशोधित कर सकती है, जिससे संभावित रूप से खगोल भौतिकी में क्वार्क सितारों की खोज हो सकती है, जो भौतिकी में एक खुली समस्या बनी हुई है।

ओटावा में प्लास्टिक संधि वार्ता थोड़ी प्रगति के साथ संपन्न हुई

(2 मई)

- कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् समूह ओटावा, कनाडा में वैश्विक प्लास्टिक संधि वार्ता के नतीजे से निराश हैं।
- वार्ता का उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता बनाना था, जिसमें 192 सदस्य देशों ने भाग लिया।
- अंतर-सरकारी वार्ता समिति (आईएनसी) के नेतृत्व में प्लास्टिक को खत्म करने के लिए 2022 में संकल्प के बाद से यह वार्ता का चौथा दौर था।
- प्लास्टिक और तेल अर्थव्यवस्थाओं के बीच संबंध, तथा इसमें शामिल विशाल विनिर्माण व्यवसाय, उन्मूलन प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश करते हैं।
- विभिन्न अनुप्रयोगों में प्लास्टिक का व्यापक उपयोग तथा किफायती विकल्पों की कमी इस मुद्दे को और जटिल बना देती है।
- प्लास्टिक को पर्यावरण के लिए हानिकारक माना जाता है, क्योंकि यह आसानी से नष्ट नहीं होता और समुद्री तथा स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषित करता है।
- पर्यावरण जांच एजेंसी के जैकब कीन-हैमरसन के अनुसार, प्लास्टिक के असंवहनीय उत्पादन के मुद्दे पर बातचीत विफल रही।
- यद्यपि देश उत्सर्जन का अधिक विस्तृत आकलन करने पर सहमत हो गए, लेकिन इस दौर की वार्ता में प्राथमिक प्लास्टिक उत्पादन को रोकने की समयसीमा निर्धारित नहीं की जा सकी।
- वैश्विक प्लास्टिक संधि वार्ता में उत्पादन, उत्पाद डिजाइन, अपशिष्ट प्रबंधन, समस्याग्रस्त प्लास्टिक, वित्तपोषण और न्यायोचित परिवर्तन सहित विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया।
- इसका लक्ष्य संधि के पाठ पर प्रगति करना तथा अगले आधिकारिक सत्र से पहले अंतर-सत्रीय कार्य को आगे बढ़ाने पर सहमति बनाना था।
- यूएनईपी की कार्यकारी निदेशक इंगर एंडरसन ने इन लक्ष्यों की प्राप्ति पर संतोष व्यक्त किया, लेकिन इस बात पर जोर दिया कि प्लास्टिक प्रदूषण संकट जारी रहने के कारण यह कार्य अभी भी जारी है।
- अंतर-सत्रीय कार्य में प्रमुख मुद्दों पर सहमति बनाने के लिए आधिकारिक सत्रों के बीच विशेषज्ञ बैठकें शामिल होती हैं।
- अगली बैठक, जो अंतिम बैठक होने की उम्मीद है, नवंबर 2024 में बुसान, दक्षिण कोरिया में निर्धारित है।
- भारत ने प्राथमिक प्लास्टिक पॉलिमर पर प्रतिबंधों का विरोध किया, यह तर्क देते हुए कि उत्पादन में कठौती यूएनईए प्रस्तावों के दायरे से अधिक है।
- भारत ने प्लास्टिक निर्माण में उपयोग किए जाने वाले रसायनों को स्वीकार किया लेकिन इस बात पर प्रकाश डाला कि उनमें से कुछ पहले से ही निषेध या विनियमन के अधीन हैं।

सेवाओं की कहानी (2 मई)

- गोल्डमैन सैक्स ने 'दुनिया की उभरती हुई सेवा फैक्ट्री के रूप में भारत का उदय' शीर्षक से एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की, जिसमें वैश्विक सेवाओं में भारत की हालिया सफलता का विश्लेषण किया गया और विकास की संभावनाओं और जोखिमों की भविष्यवाणी की गई।

- 1991 में आर्थिक सुधारों के बाद से भारत के आईटी सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन पिछले 18 वर्षों में विभिन्न सेवा निर्यातों पर विचार करते हुए रिपोर्ट एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाती है।
- व्यावसायिक परामर्श सेवाओं में सबसे तेजी से वृद्धि हुई है, जबकि यात्रा सेवाओं में धीमी वृद्धि देखी गई है, तथा वित्तीय सेवाओं को GIFT सिटी जैसी पहलों से लाभ हो सकता है।
- भारत का अमूर्त निर्यात वैश्विक सेवा निर्यात की तुलना में दोगुनी गति से बढ़ा और पिछले वर्ष लगभग 340 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया।
- वैश्विक सेवा बहिर्वाह में भारत की हिस्सेदारी 2005 में 2% से बढ़कर 2023 में 4.6% हो गयी, जबकि माल निर्यात में भी इसकी हिस्सेदारी बढ़ी है।
- सेवाओं के निर्यात ने महंगे तेल आयात जैसे झटकों के विरुद्ध भारत के बाह्य खाते को संतुलित करने में मदद की है, गोल्डमैन सैक्स ने अनुमान लगाया है कि 2030 तक निर्यात 800 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा।
- हालांकि, तात्कालिक परिदृश्य अनिश्चित बना हुआ है, क्योंकि शीर्ष आईटी कंपनियां कर्मचारियों की छंटनी कर रही हैं तथा विकास संबंधी मार्गदर्शन रूढ़िवादी है।
- वैश्विक क्षमता केन्द्र कुछ राहत प्रदान करते हैं, लेकिन चुनौतियां बनी हुई हैं, जिनमें नौकरी के लिए तैयार स्नातकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता और बेंगलुरु जैसे विकासशील क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव का समाधान करना शामिल है।
- गंतव्य देशों में संरक्षणवादी प्रवृत्तियां और घरेलू नीतिगत हस्तक्षेप निर्यात में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं, जिसके लिए सेवाओं की वृद्धि को बनाए रखने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।
- सिफारिशों में वैश्विक बाजार तक पहुंच को बढ़ावा देना, सभी व्यावसायिक सेवाओं के लिए अवसरों को बढ़ावा देना, तथा एआई, विनिर्माण-संबंधी सेवाओं और ब्लॉकचेन अनुप्रयोगों जैसे क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए हल्के-फुल्के नियामक दृष्टिकोण को अपनाना शामिल है।

समुद्र भी बढ़ता है (2 मई)

भारत को तापमान वृद्धि के आंकड़ों के लिए हिंद महासागर के देशों के साथ सहयोग करना चाहिए

- भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में एक हालिया अध्ययन में हिंद महासागर पर वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के प्रभाव का अनुमान लगाया गया है।
- अध्ययन का अनुमान है कि हिंद महासागर 1.2 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो गया है और 2020 से 2100 तक 1.7 डिग्री सेल्सियस से 3.8 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो सकता है।
- चक्रवातों के तेजी से बनने से जुड़ी हिंद महासागर में समुद्री गर्मी की लहरें प्रति वर्ष औसतन 20 दिन से दस गुना बढ़कर 220-250 दिन प्रति वर्ष होने की उम्मीद है।
- इससे उष्णकटिबंधीय हिंद महासागर में "लगभग स्थायी हीटवेव स्थिति" पैदा हो सकती है, मूंगा विरंजन में तेजी आ सकती है और मत्स्य पालन क्षेत्र को नुकसान हो सकता है।
- समुद्र की गर्मी की मात्रा न केवल सतह पर बल्कि 2,000 मीटर नीचे तक भी बढ़ रही है, वर्तमान दर 4.5 ज़ेटा-जूल प्रति दशक और अनुमानित भविष्य की दर 16-22 ज़ेटा-जूल प्रति दशक है।
- हिंद महासागर के गर्म होने से भारत की मुख्य भूमि प्रभावित होगी, जिससे भयंकर चक्रवातों की आवृत्ति बढ़ेगी और मानसून अधिक अनिश्चित हो जाएगा, जिससे लंबे समय तक सूखा रहेगा और उसके बाद तीव्र वर्षा और बाढ़ आएगी।

- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की वैश्विक प्रतिबद्धताओं से महासागरों के तापमान में वृद्धि पर कोई विशेष प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है, क्योंकि बाह्य परिवर्तनों के प्रति महासागरों की प्रतिक्रिया धीमी है।
- भारत को बुनियादी ढांचे के विकास और संरक्षण उपायों को दिशा देने के लिए डेटा एकत्र करने और अनुमान लगाने में निवेश करने के लिए हिंद महासागर के किनारे के देशों के साथ सहयोग करना चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र में वर्तमान प्रयास प्रशांत महासागर क्षेत्र की तुलना में अपर्याप्त हैं।

लड़ने का गलत तरीका (2 मई)

धन कर

- एक निश्चित सीमा से ऊपर किसी व्यक्ति या परिवार की शुद्ध संपत्ति पर लगाया जाने वाला वार्षिक कर। शुद्ध संपत्ति में आम तौर पर अचल संपत्ति, वित्तीय होल्डिंग्स, वाहन और अन्य मूल्यवान संपत्तियां शामिल होती हैं।
- **वर्तमान वैश्विक स्थिति:** संपत्ति कर अपेक्षाकृत असामान्य हैं। नॉर्वे, स्पेन और स्विट्जरलैंड जैसे कुछ ही देश वर्तमान में इन्हें लागू करते हैं।
- **भारत में ऐतिहासिक उपयोग:** भारत में 1957 से 2015 तक संपत्ति कर लागू था, जब इसे समाप्त कर दिया गया।

संपत्ति कर के लिए तर्क

- **असमानता को कम करना:** समर्थकों का तर्क है कि धन कर अत्यधिक धन एकाग्रता को संबोधित करते हैं और आर्थिक असमानता को कम करने में मदद करते हैं।
- **राजस्व उत्पन्न करना:** संपत्ति कर, विशेष रूप से बहुत अमीर लोगों पर, सरकारी राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है।
- **उत्पादक निवेश को प्रोत्साहित करना:** कुछ लोग तर्क देते हैं कि संपत्ति कर धनी व्यक्तियों को धन संचय करने के बजाय अपनी परिसंपत्तियों को अधिक उत्पादक निवेशों में लगाने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

संपत्ति कर के विरुद्ध तर्क

- **प्रशासनिक जटिलता:** विविध परिसंपत्तियों का वास्तविक मूल्य निर्धारित करना और अनुपालन सुनिश्चित करना कठिन और महंगा हो सकता है।
- **पूंजी पलायन:** संपत्ति कर के कारण धनी व्यक्ति कम कर वाले देशों की ओर पलायन कर सकते हैं।
- **बचत और निवेश को हतोत्साहित करना:** आलोचकों का तर्क है कि संपत्ति कर बचत, निवेश और परिणामस्वरूप आर्थिक विकास को हतोत्साहित कर सकता है।

वंशानुक्रम कर

- **परिभाषा:** परिसंपत्ति स्वामी की मृत्यु पर लाभार्थियों को हस्तांतरित परिसंपत्तियों के मूल्य पर लगाया जाने वाला कर।
- **वर्तमान वैश्विक स्थिति:** यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जापान और दक्षिण कोरिया सहित देशों द्वारा लागू संपत्ति कर की तुलना में विरासत कर अधिक आम हैं।
- **भारत में ऐतिहासिक उपयोग:** भारत ने 1985 में विरासत कर (तब इसे संपदा शुल्क कहा जाता था) को समाप्त कर दिया।

विरासत करों के लिए तर्क

- **अंतर-पीढ़ीगत असमानता को संबोधित करना:** विरासत कर पीढ़ियों के बीच विशाल धन के हस्तांतरण को कम करके खेल के मैदान को समतल करने में मदद कर सकते हैं।
- **धर्मार्थ दान को प्रोत्साहित करना:** कर लाभ व्यक्तियों को अपनी संपत्ति का एक हिस्सा दान के लिए छोड़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

- **अपेक्षाकृत आसान प्रशासन:** संपत्ति कर की तुलना में, मृत्यु के कारण स्थानांतरण पर संपत्ति का मूल्य निर्धारित करना प्रशासनिक रूप से सरल माना जाता है।

विरासत करों के विरुद्ध तर्क

- **दोहरा कराधान:** कुछ लोगों का तर्क है कि जब संपत्ति अर्जित की गई तो आय पर पहले से ही कर लगाया जा चुका है, जिससे विरासत में मिलने पर दोहरा कराधान हो जाता है।
- **पारिवारिक व्यवसायों पर प्रभाव:** उच्च विरासत करों के कारण परिवार द्वारा संचालित व्यवसायों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करना मुश्किल हो सकता है।
- **बचने की संभावना:** मृत्यु से पहले धन हस्तांतरित करने के लिए कर से बचने की रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं।

- फ्रांसीसी अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी और अन्य अर्थशास्त्रियों ने भारत में आर्थिक असमानता की प्रवृत्ति पर निष्कर्ष प्रकाशित किए।
- उन्होंने "भारत में आय और धन असमानता, 1922-2023: अरबपति राज का उदय" शीर्षक से एक पेपर लिखा।
- अध्ययन से पता चलता है कि भारत में वर्तमान असमानता अंतर-युद्ध ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान की असमानता से कहीं अधिक है।
- 2022 में, भारतीय आबादी के शीर्ष 1% के पास कुल संपत्ति का 40.1% था और उन्होंने कुल आय का 22.6% अर्जित किया।
- इसके विपरीत, निचले 50% के पास कुल संपत्ति का 6.4% था और उन्होंने कुल आय का 15% अर्जित किया।
- तुलनात्मक रूप से, शीर्ष 10% के पास कुल संपत्ति का 65% हिस्सा था और उन्होंने कुल राष्ट्रीय आय का 57.7% अर्जित किया।
- लेखकों का तर्क है कि भारत की कर प्रणाली, जो मुख्य रूप से लोगों की आय पर आधारित है, प्रतिगामी है।
- वे असमानता को दूर करने के लिए अमीरों पर संपत्ति कर लागू करने का प्रस्ताव करते हैं।
- हालांकि पिकेटी का डेटा चिंताजनक हो सकता है, लेकिन इस बात पर बहस चल रही है कि क्या धन पुनर्वितरण सबसे अच्छा समाधान है।

आर्थिक पाई बड़ी है

- पिकेटी और सह-लेखकों ने भारत में आय और धन असमानता में दो प्रमुख रुझान देखे:
 1. 1980 के दशक से असमानता बढ़ी जब भारत ने बाजार-उन्मुख नीतियों को अपनाया।
 2. समाजवादी दशकों के दौरान आर्थिक विकास स्थिर था लेकिन 1990 के बाद इसमें तेजी आई।
- राष्ट्रीय आय के निचले 50% हिस्से में गिरावट के बावजूद, उनकी वास्तविक आय और जीवन स्तर में वृद्धि हुई।
- निचले 50% की कुल वास्तविक आय 1991 और 2022 के बीच चार गुना से अधिक बढ़ गई।
- एक बाजार अर्थव्यवस्था में आय का हिस्सा राष्ट्रीय आय के हिस्से के लिए प्रतिस्पर्धा करने की समूहों की क्षमता पर निर्भर करता है।
- भारत में शीर्ष आय वाले निचले 50% लोगों की तुलना में काफी अधिक कमाते हैं।

- एक मुक्त बाज़ार में, इस तरह की आय असमानताओं को अधिक लोगों को उच्च-भुगतान वाले व्यवसायों को अपनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- हालाँकि, पूंजी तक सीमित पहुंच और महंगी शिक्षा जैसी बाधाएँ वास्तविकता में इसमें बाधक हैं।
- वित्तीय और चिकित्सा शिक्षा क्षेत्रों को उदार बनाने से गरीबों को आकर्षक करियर बनाने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।
- उच्च आय वालों पर भारी कर लगाने से उच्च वेतन वाली नौकरियों की ओर श्रमिकों का रुझान हतोत्साहित हो सकता है तथा उनकी आपूर्ति कम हो सकती है।

धन असमानता अपरिहार्य है

- भारत में धन असमानता अत्यधिक है, यहां शीर्ष 1% लोगों के पास निचले 50% लोगों की तुलना में काफी अधिक धन है।
- औसतन, शीर्ष 1% की शुद्ध संपत्ति ₹5.4 करोड़ है, जबकि निचले 50% के पास केवल ₹1.7 लाख है।
- बाजार अर्थव्यवस्था में, धन असमानता स्वाभाविक है क्योंकि यह उन लोगों को पुरस्कृत करती है जो पूंजी निवेश या आवंटन में बेहतर होते हैं।
- जो उद्यमी नवाचार करते हैं और अनेक लोगों को लाभ पहुंचाने वाले उत्पाद बनाते हैं, उनकी संपत्ति में वृद्धि होती है।
- बाजार यह सुनिश्चित करता है कि पूंजी सर्वोत्तम निवेशकों के पास जाए और संसाधनों का उपयोग अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए कुशलतापूर्वक किया जाए।
- हालाँकि, भारत में अत्यधिक धन असमानता केवल उद्यमशीलता की सफलता के कारण नहीं, बल्कि शीर्ष 1% द्वारा प्राप्त विशेष विशेषाधिकारों के कारण है।
- प्रतिस्पर्धा से सरकारी संरक्षण अमीरों को बिना योग्यता के अपना पद बनाए रखने की अनुमति देता है।
- समाधान इन विशेष विशेषाधिकारों को हटाने और अर्थव्यवस्था में अधिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने में निहित है।
- बढ़ती प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक रूप से शीर्ष 1% की संपत्ति हिस्सेदारी को कम कर देगी जबकि व्यापक अर्थव्यवस्था को लाभ होगा।
- मुक्त प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करती है कि सर्वश्रेष्ठ निवेशक शीर्ष पर पहुंचें और लगातार नवप्रवर्तन करें, जिससे सभी के लिए आर्थिक लाभ बढ़े।

धन कर का प्रभाव

- संपत्ति कर के अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं।
- निवेशक उच्च करों की भरपाई के लिए पूंजी निवेश कम कर सकते हैं, जिससे श्रमिकों के वेतन और भूमि मालिक की आय पर असर पड़ेगा।
- इससे अप्रत्यक्ष रूप से साधारण श्रमिक प्रभावित होंगे, जो अधिकतर निचले 50% या मध्यम 40% आय वर्ग से होंगे, तथा उनकी आय और उत्पादन में कमी आएगी।
- अंततः, अमीरों पर लगाया गया संपत्ति कर, निम्न आय वर्ग पर लगाया जाने वाला कर बन सकता है।
- शीर्ष 1% के पास मौजूद अधिकांश संपत्ति, उपभोक्ता वस्तुओं के रूप में नहीं, बल्कि कारखानों और अचल संपत्ति जैसी पूंजीगत परिसंपत्तियों के रूप में है।

- अमीरों पर कर लगाने से जरूरी नहीं कि गरीबों के जीवन स्तर में सुधार हो, क्योंकि यह उनकी पूंजीगत परिसंपत्तियां ही हैं जो उत्पादकता बढ़ाती हैं तथा उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सुधार करती हैं।
- संपत्ति कर से आर्थिक विकास और जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- अमीरों पर कर लगाने के बजाय, गरीबों को बाजार में आर्थिक हिस्सेदारी के लिए प्रतिस्पर्धा करने हेतु अधिक आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करना, असमानता को कम करने और गरीबों की मदद करने का बेहतर तरीका हो सकता है।

एक पशु संरक्षण विधेयक जिसे जून में स्थानांतरित किया जाना चाहिए (2 मई)

- दुनिया भर के देश अपने पशु क्रूरता कानूनों को अद्यतन कर रहे हैं और दंड बढ़ा रहे हैं।
- क्रोएशिया ने हाल ही में घरेलू पालतू जानवरों के साथ क्रूरता और उनके परित्याग के कृत्यों के लिए सख्त दंड लागू किया है।
- क्रोएशियाई दंड संहिता में संशोधन से जानवरों को अनावश्यक दर्द या पीड़ा पहुंचाने और उन्हें मारने या गंभीर रूप से दुर्व्यवहार करने के लिए दंड में वृद्धि की गई है।
- भारत में, मुंबई में जय नामक सामुदायिक कुत्ते की हत्या से जुड़ी एक घटना ने पशु क्रूरता के लिए कड़ी सजा की मांग को जन्म दिया।
- इस घटना के कारण सोशल मीडिया पर #जस्टिसफॉरजय आंदोलन शुरू हुआ, साथ ही प्रार्थना सभाओं और कैंडललाइट विजिल्स के साथ पशु क्रूरता के खिलाफ मजबूत आपराधिक कानूनों का आग्रह किया गया।

सज़ा सिद्धांतों पर

- पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (पीसीए) (1960) यह भारत का प्राथमिक कानून है जो पशुओं के प्रति क्रूरता को अपराध मानता है।
- हालाँकि, इसके अपर्याप्त होने के बारे में चर्चाएं होती रही हैं, जिनमें खराब प्रवर्तन और कम दंड शामिल हैं।
- दंड सिद्धांतों के नजरिए से विश्लेषण करने पर, पीसीए अधिनियम अप्रभावी प्रतीत होता है।
- दण्ड सिद्धांत सुझाते हैं कि दण्ड के तीन मुख्य लक्ष्य होते हैं: प्रतिशोध, निवारण, और सुधार।
- प्रतिशोध से तात्पर्य किए गए अपराध का बदला लेने के लिए दी गई सजा से है।
- निवारण में अपराधी और आम जनता दोनों को भविष्य में ऐसे अपराध करने से हतोत्साहित करने के लिए दंड देना शामिल है।
- सजा के माध्यम से अपराधी के भविष्य के व्यवहार को आकार देना है।

जमानती अपराध, कमजोर जुर्माना

- वर्तमान पशु क्रूरता निवारण (पीसीए) अधिनियम में कई कमियां हैं जो इसकी प्रभावशीलता में बाधा डालती हैं।
- अधिनियम के तहत कई अपराध जमानती और गैर-संज्ञेय हैं, जिससे आरोपी व्यक्तियों के लिए जमानत लेना और पुलिस जांच से बचना आसान हो जाता है।

- पीसीए अधिनियम द्वारा निर्धारित जुर्माना 130 वर्षों से अधिक समय से अपरिवर्तित है, जिससे वे पशु क्रूरता को रोकने में महत्वहीन हो गए हैं।
- कानून अदालतों को कारावास या जुर्माना लगाने के बीच चयन करने की अनुमति देता है, जिससे अपराधी जुर्माना देकर गंभीर सजा से बच सकते हैं।
- दंड के रूप में सामुदायिक सेवा का कोई प्रावधान नहीं है, जो संभावित रूप से अपराधियों को सुधार सके।
- नवंबर 2022 में, ड्राफ्ट पीसीए (संशोधन) विधेयक, 2022 को सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए प्रकाशित किया गया था, लेकिन संसद में पेश नहीं किया गया था।
- मसौदा विधेयक में महत्वपूर्ण संशोधनों का प्रस्ताव है, जिसमें जानवरों के लिए मौलिक स्वतंत्रता, बढ़ी हुई सजा और जुर्माना और नए संज्ञेय अपराध शामिल हैं।
- हालाँकि, मसौदा विधेयक अभी भी अदालतों को कुछ अपराधों के लिए कारावास और जुर्माने के बीच चयन करने की अनुमति देता है, जिससे संभावित रूप से अपराधी जुर्माना देकर कारावास से बच सकते हैं।

ध्यान देने योग्य शब्द

- अपनी सीमाओं के बावजूद, मसौदा विधेयक को लागू करना भारत में पशु कानून में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक होगा।
- 1954 में, रुक्मिणी देवी अरुंडेल ने पुराने पीसीए अधिनियम (1890) को एक नए कानून से बदलने की वकालत की।
- अरुंडेल ने इस अवधारणा पर अपने सांस्कृतिक जोर के कारण अहिंसा का अभ्यास करने में उदाहरण प्रस्तुत करने की भारत की जिम्मेदारी पर बल दिया।
- जून में सत्ता में आने वाली नई सरकार को यह जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए।
- इस जिम्मेदारी को स्वीकार करके सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है कि प्रस्तावित संशोधनों को लागू किया जाए।